ए. पी. एस. एम. कॉलेज, बरौनी
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

हिन्दी विभाग, स्नातक प्रथम वर्ष(प्रथम पत्र)
सत्र-2020-2023,
डॉ मेनका कुमारी

आधुनिकता का प्रवेशद्वार : भारतेंदु युग

आधुनिक काल (1850-अब तक)

आधुनिक काल का विभाजन-

- भारतेन्दु युग- 1850-1900 ई.
- द्विवेदी युग- 1900-1918 ई.
- छायावाद- 1918-36 ई.
- प्रगतिवाद- 1936-43 ई.
- प्रयोगवाद- 1943-51 ई.
- नई कविता- 1951-60 ई.
- साठोत्तरी कविता- 1960-80 ई.
- समकालीन कविता- 1980 ई.के बाद

आधुनिकता-

- आधुनिकता का प्रारंभ यूरोप से होता है। यूरोप में **सोलहवीं सदी** के मध्य से लेकर **उन्नीसवीं सदी** के मध्य तक आधुनिक शब्द का प्रयोग 'वर्तमान' के लिए किया जाता था। पुनर्जागरण के बाद 'आधुनिक' शब्द ने कई विशेषणों को जन्म दिया जैसे- आधुनिकतावाद, आधुनिकीकरण आदि।

- उन्नीसवीं शताब्दी के समाप्त होने तक आधुनिकता, 'सुधार', 'कार्यक्षमता', 'प्रगतिशीलता' आदि का पर्याय बनकर प्रयुक्त होने लगा।
- **आधुनिकीकरण की विशेषताएं-**
- 1 सामाजिक वर्गों की सीमाएं मिटना
- 2 ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों और महानगरों की ओर प्रस्थान
- 3 सामाजिक गतिशीलता
- 4 शिक्षा का प्रसार
- 5 ज्ञानविज्ञान का विस्तार
- 6 सामंती मूल्यों का ह्रास
- 7 नगरीकरण और नए अभिजात वर्ग(बुर्जुआ) का उदय

- आधुनिकता का संबंध आधुनिकीकरण के फलस्वरूप धार्मिक विश्वासों और रूढ़िगत रीति-रिवाजों के विरुद्ध नवीन और वैज्ञानिक आविष्कारों, विचारों, नए मूल्यों आदि से है। आधुनिकीकरण शब्द उन समस्त परिवर्तनों तथा प्रक्रियाओं के लिए प्रयोग किया जाता है जो **पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत औद्योगीकरण तथा यंत्रीकरण के कारण प्रकट हुई है**।

- आधुनिकतावाद का युग यूरोप में **उन्नीसवीं सदी से शुरू होकर बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक माना जाता है।** कुछ विचारकों के अनुसार यूरोप में आधुनिकता के दो अलग-अलग काल हैं- 1.आधुनिकतावाद जो अपने प्रारंभ से लेकर बीसवीं सदी के आरंभिक दो दशकों तक जारी रहा 2. नव आधुनिकतावाद, जो इसके बाद शुरू हुआ।

- अल्पविकसित देशों या तीसरी दुनिया के देशों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया और बाद में प्रारंभ हुई। विचारकों ने अलग-अलग देशों में आधुनिकतावाद के विकास का अलग-अलग समय निश्चित किया है। हिन्दी में आधुनिकतावाद के उदय को लेकर अनेक प्रकार के मत प्रचलित हैं। पश्चिमी चिंतन से प्रभावित लोग उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों अर्थात **भारतेन्दु युग से आधुनिकता का उदय मानते हैं** और कुछ लोग आधुनिकतावाद का समय **प्रयोगवाद** और **नई कविता** से जोड़ते हैं।

- कुछ लोगों का यह भी विश्वास है कि हिन्दी में आधुनिकतावाद का जन्म द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में उत्पन्न नवीन संवेदना और नई चिंतन दृष्टि के साथ हुआ।

- **'भारतेन्दु युग आधुनिकता का प्रवेशद्वार है'** इस कथन में आधुनिकता से तात्पर्य नवीन वैज्ञानिक, तर्कयुक्त दृष्टिकोण जो रूढ़िबद्धता के विरोध में खड़ा है।

- आधुनिक काल में आधुनिकता के फैलाव के साथ **गद्य का महत्त्व बढ़ गया। गद्य का संबंध वैचारिकता से है।** यद्यपि आधुनिक भाव बोध गद्य में ही नहीं पद्य में भी अभिव्यक्त हुआ। 19 वीं शताब्दी में पूरे देश में **नवजागरण की लहर** दौड़ जाती है। हिन्दी क्षेत्र के नवजारण पर मुख्यतः अंग्रेजों के शोषण, 1857 के **सिपाही विद्रोह** और राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, रामकृष्ण परमहंस आदि का प्रभाव है। **भारतेन्दु इस नवजागरण के अग्रदूत** थे। उनके और उनके सहयोगी जिसे **भारतेन्दु मंडल** कहा जाता है के साहित्य में आधुनिकता का प्रवर्तन हुआ।

इस आधुनिकता के प्रधानतः तीन लक्षण हैं-

1.

वह यथार्थ बोध पर आधारित है। साहित्य काव्य-रूढ़ियों, कवि-शिक्षा या किसी निर्दिष्ट प्रणाली पर न चलकर अपनी संवेदना आसपास के जीवन से ग्रहण करने लगा।

2

यथार्थ-बोध का वास्तविक अर्थ यथार्थ की विषमता बोध होता है। इसीलिए इस युग के साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि विषमताओं एवं विरूपताओं का उद्घाटन किया

3.

- विषमता-बोध से उत्पन्न संवेदना में पीड़ा या छटपटाहट भी है। रचनाकार अपने साहित्य से इस विषमता को पाटने का उद्देश्य व्यंजित करने लगा। इसलिए आधुनिक साहित्य रस-मग्न करने के स्थान पर आनंद के साथ कर्म की प्रेरणा भी देने लगा। साहित्य सामाजिक चेतना और उत्तरदायित्व से युक्त हो गया। रीतिवादी साहित्य से आधुनिक साहित्य की यही विशेषता थी, जिसका प्रवर्तन भारतेंदु ने किया।